कड़कनाथ चूजों में जगह की आवश्कता का विवरण

उम्र (दिन)	जगह की आवश्कता
1–10 दिन	3 चूजे/फीट
11–20 दिन	2 चूजे/फीट
21–32 दिन	1 चूजा/फीट

कड़कनाथ कुक्कुटों में दाना एवं पानी के बर्तनों की व्यवस्था

आटोमेटिक ड्रिकर या फीडर 100 चूजों पर दो लगाना चाहिए। पुराने चद्दर के बने फीडर 100 चूजों पर 2 लगाना चाहिए दाने एवं पानी के बर्तनों की उँचाई हमेशा मुर्गे के क्रापँ या कंधे की उँचाई के बराबर होना चाहिए ताकि दाना खाने एवं पानी पीने में मुर्गे को असुविधा न हो। एवं दाना पानी खराब होने से बचा रहे यदि उँचाई का ध्यान नही दिया गया तो मुर्गे आपस में नोचना चालू कर देते है दाना खाते समय दाना गिराते ज्यादा है बैठकर दाना खाते है एवं वही बैठ जाते हैं उठते नही जिससे दूसरे मुर्गे को खाने का मौका नही मिल पाता जिसका असर वजन पर पड़ता है।

कड़कनाथ कुक्कुटों में वृद्धि मापने का तरीका

इसको एक समीकरण से नापते है जिसको फीड़ कनेक्शन रेस्यों (FCR) नाम दिया गया है। जो दाना खाने से वजन में वृद्धि को प्रदर्शित करता है।

(FCR) = कुल दाना खपत (कि.ग्रा.)/कुल मुर्गे का वजन (कि.ग्रा.)

जैसे 120 दिन के मुर्गे ने 120 दिनों में कुल 4000 ग्राम या 4.00 कि.ग्रा. दाना खाया एवं उसका वजन 120 दिनों में 1100 ग्राम या 1.10 कि. ग्रा. आया तो इसका (FCR) 4000/1100 = 3.63 होगा जिसका मतलब है कि 3.63 किलो दाना देने पर कड़कनाथ मुर्गे में 120 दिनों में 1.1 किलो वजन आ जाता है।

अण्डादेय कड़कनाथ मुर्गियों में प्रबंधन

अण्डादेय मुर्गियाँ वे कहलाती है जिन्हें केवल अण्डे उत्पादन के लिए पाला जाता है इनका वजन कम होता है कड़कनाथ मुर्गियों से प्रतिवर्ष 70 से 80 अण्डे प्राप्त कर सकते है, जबकि व्याइट लेगहार्न प्रजाति की मुर्गी से प्रतिवर्ष 320 अण्डे प्राप्त किये जा सकते है।

अण्डादेय मुर्गीयों को पालने की तीन अवस्थायें होती है

1. चूजों का पालन–1 सप्ताह से 8 सप्ताह तक
2. बाढ़ (ग्रोवर) पालन–9 सप्ताह से 18 सप्ताह तक
3. लेयर(अण्डोत्पादन अवस्था)–19 सप्ताह से 72 सप्ताह तक

चूजों का पालन :– इस अवस्था को ब्रुडिंग अवस्था कहते है। इन चूजों को चिक स्टार्टर मेस दिया जाता है जिससे 2750 किलो कैलोरी उर्जा एवं 20 से 21 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत कैल्शियम और 0.45 प्रतिशत फास्फोरस की मात्रा होती है चिक स्टार्टर मेस मे दाना लगभग 7 से 8 सप्ताह तक चूजों को दिया जाता है इस अवस्था में चूजों का वजन लगभग 450 ग्राम के आसपास हो जाता है।

बाढ़ (ग्रोवर) पालन का समय :– ब्रुडिंग के बाद एवं अण्डा उत्पादन के पूर्व का समय बाढ़ (ग्रोवर) का समय कहलाता है ये दानों अवस्थायें अण्डोत्पादन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान करती है इस पर ही भविष्य में अण्डादेय मुर्गियों की अण्डोत्पादन क्षमता पूर्ण निर्भर करती है। बाढ़ (ग्रोवर) अवस्था में ग्रोवर मेंस दाना दिया जाता है जिसमें 2600 किलो कैलोरी उर्जा, 17–18 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत कैल्शियम और 0.4 प्रतिशत फास्फोरस होता है।

लेयर अवस्था :– जैसे की मुर्गियों मे अण्डा उत्पादन शुरु हो जाता है तब इनको लेयर मेस दाना दिया जाता है जिसमें 2500 किलो कैलोरी उर्जा, 18 प्रतिशत प्रोटीन, 3.5 प्रतिशत कैल्शियम और 0.45 प्रतिशत फास्फोरस होता है।

विभिन्न सप्ताहों में अण्डों का उत्पादन

सप्ताह	अण्डोत्पादन प्रतिशत
20	10 प्रतिशत
26	97 प्रतिशत
50	90 प्रतिशत
60	85 प्रतिशत
72	80–85 प्रतिशत

एक अण्डादेय मुर्गी की अण्डोत्पादन की अवस्था में 42 किलो आहार की खपत हो जाती है।

अण्डादेय कड़कनाथ मुर्गियों का सप्ताहवार प्रबंधन

प्रथम सप्ताह :–

1. ब्रूडर का तापमान 90 से 95 होना चाहिए।
2. गुड़ या शक्कर या इलेक्ट्रोलाईसस आदि पानी में देना चाहिए।
3. विटामिन, एण्टीबायोटिक दवायें देना चाहिए।
4. मक्के का दलिया पेपर के उपर बुरकना चाहिए एवं धीरे–धीरे प्लेट, ट्रे एग ट्रे या फीड़र लगाना चाहिये।
5. चूजों को आरामदेय वातावरण में पालना चाहिए।
6. कमजोर सुस्त चूजों को प्रथक ब्रुडर में पालना चाहिए।
7. पहले दो दिन चौबीस घन्टे प्रकाश देना चाहिए।
8. गम्बेरो टीकाकरण, तीसरे दिन आँख में ड्रापर के सहायता से देना चाहिए।
9. सातवें दिन लसोटा एफ–1 आई ड्राप से देना चाहिए।

दूसरा सप्ताह :–

1. ब्रुडर का तापमान 85 से 90 कर देना चाहिये।
2. ब्रुडर गार्ड एवं ब्रुडर एरिया बढ़ा देना चाहिए ब्रुडर की उँचाई बढ़ा देना चाहिए।
3. पानी एवं दाने के बर्तन प्रति हजार चूजों 20/20 की मात्रा में आवश्यक रुप से होना चाहिए।
4. 7 से 10 दिन में टचिंग डीविर्किंग (चोंच काटना) करना चाहिए इसके बाद 3 से 5 दिन तक विटामिन पीने के पानी में देना चाहिए।